दिनांक :- 22-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- 12th (अनुशांगिक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- पाँच

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- लौहयुगीन संस्कृतियाँ

चित्रित धूसर मृद्भाण्ड ताम्र तथा काँस्य के प्रयोग के पश्चात् मनुष्य ने लौह धातु का ज्ञान प्राप्त कर इसका प्रयोग अस्त्र शस्त्र एवं कृषि उपकरणों के निर्माण में किया। इसके फलस्वरूप मानव जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। उत्खनन के परिणाम स्वरूप भारत के उत्तरी, पूर्वी, मध्य तथा दक्षिणी भागों के लगभग सात सौ से भी अधिक पुरास्थलों में लौह उपकरणों के प्रयोग के साक्ष्य प्रकाश में आये।

उत्तर भारत के प्रमुख स्थल अंतरजीखेड़ा, आलमगीरपुर अहिच्छत्र, अल्लाहपुर (मेरठ) खलौआ नोह रोपड़ वटेश्वर हस्तिनापुर, श्रावस्ती, काम्पिल, जखेड़ा आदि है। इनमें हस्तिनापुर के उत्खनन की सामग्री ही विधिवत प्रकाशित की गयी है। इन स्थलों की प्रमुख पात्र परम्परा चित्रित धूसर मृद्भाण्ड (Painted Grey ware) है। इसके साथ लौह के विविध उपकरण जैसे भाले, बाणाग्र, कुल्हाड़ी, कुदाल दरौंती, चाकू, फलक, कील, पिन, चिमटा, बसूला आदि मिले है। हस्तिनापुर तथा अंतरजीखेड़ा से धातुमल (Iron Slag) मिलता है जिससे सूचित होता है कि धातु को गलाकर ढलाई की जाती है। चित्रित धूसर पात्र परम्परा की तिथि रेडियो कार्बन पद्धति के आधार पर ईसा पूर्व आठवीं नवीं निर्धारित की गयी है। नोह तथा इसके दोआब क्षेत्र के काले और लाल मृद्भाण्ड (Black and Red Ware)

Scanned with CamScanner

के साथ लोहा प्राप्त हुआ है जिसकी संभावित तिथि ईसा पूर्व 1400 के लगभग है। भगवानपुर, माण्डा, देधरी, आलमगीर पुर रोपड़ आदि मे चित्रित धूसर भाण्ड, जिसका संबंध लोहे से माना जाता है। सैंधव सभ्यता के पतन के तत्काल बाद (लगभग 1700 ई० पू०) मिल जाते है।

पूर्वी भारत के प्रमुख लौह कालीन स्थल है। पाण्डुराजार ढिबि, महिषदल, सोनपुर, चिरान्ड आदि। यहां लौह उपकरण काले और लाल मृद्भाण्डो के साथ मिले है। इसमे बाणग्र, छेनिया कीले आदि है। महिषदाल से धातु मल तथा भठ्ठिया मिलती है जिनमे सूचित होता है कि धातु को स्थानीय रूप मे गला कर उपकरण तैयार किये जाते थे रेडियो कार्बन तिथियो के आधार पर यहां लोहे का प्रारम्भ ईसा पूर्व 750-700 निर्धारित किया गया है दक्षिणी पूर्वी-उत्तर प्रदेश के विविध स्थलो झूंसी (इलाहाबाद) राजा नल का टीला (सोनभद्र), मल्हार (चन्दौली) आदि से प्राप्त पुरानिधियो के आधार पर लोहे

लोहे की प्राचीनता ई० पू० 1500 तक जाती है।

मध्य भारत (मालवा) तथा राजस्थान के कई पुरास्थलों की खुदाई से लौह उपकरण प्रकाश में आये हैं। मध्य भारत के प्रमुख पुरास्थल एरण तथा नागदा है। यहाँ से लौह निर्मित दुधारी कटारे, कुल्हाड़ी, बाणाग्र, हंसिया, चाकू आदि मिलते हैं। एरण तथा नागदा की प्रारम्भिक संस्कृति ताम्र पाषाणिक है जिसमें बाद में लोहा जोड़ गया। प्रारम्भ में ऐसा माना जाता था कि एरण तथा नागदा ताम्र पाषाणिक संस्कृति के तत्काल बाद ऐतिहासिक युग प्रारम्भ हो गया (लगभग 700-600 ईसा पूर्व) तथा इसी में लोहे का प्रयोग होने लगा। किंतु अब यह स्पष्ट होता है कि दोनों के बीच कुछ व्यवधान था। इसी व्यवधान काल में लोहे का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। एन० आर० बनर्जी ने इसकी तिथि ईसा पूर्व 800 निर्धारित की है। एरण में लौहकालीन स्तर

Scanned with CamScanner

की तीन रेडियो कार्बन तिथियाँ निर्धारित की गयी है।

(1) ईसा पूर्व 140 ± 110 (TF-326)

(2) ईसा पूर्व 270 ± 110 (TF-324)

(3) ईसा पूर्व 234 ± 79 (TF-525)

डी० के० चक्रवर्ती इसकी तिथि ई० पू० 1100 निर्धारित करते है। उल्लेखनीय है कि इसी के समीपवर्ती राजस्थान के अहाड़ नामक पुरास्थल से लौह तथा धातु मल प्रथम काल खण्ड के दूसरे स्तर के पाँच निक्षेपो में मिलता है जिसकी संभावित तिथि ईसा पूर्व 1500 के लगभग) निश्चित की गयी है।

दक्षिण भारत के आन्ध्र, कर्नाटक, केरल तथा तमिलनाडु के विविध पुरास्थलो से वृहत् अथवा महापाषाणिक (मेगालिथिक) संस्कृतियो के साक्ष्य मिलते है। ब्रह्मगिरी, मास्की पुदुकोट्टै पिंगल पुत्त, शानूर, हल्लूर आदि महत्वपूर्ण स्थल है। इन स्थलो से प्राप्त महापाषाणिक समाधियो से बड़ी संख्या में लौह

उपकरण जैसे– तलवार, कटार, त्रिशुल, चपटी कुल्हाड़ियां फावड़े, छेनी, बसूली, हंसिया, चाकू, भाले आदि लगभग तैंतीस प्रकार के उपकरण काले तथा लाल रंग के मृद्भाण्डो के साथ मिले हैं। हल्लूर नवपाषाण एवं महापाषाण के बीच संक्राति काल की सूचना देता है। विभिन्न पुरास्थलो से प्राप्त उपकरणो को भिन्न-भिन्न तिथिक्रमो में रखा गया है। होलर इस संस्कृति की प्राचीनता तिथि ईसा पूर्व तीसरी-दूसरी शती निर्धारित करते हैं किंतु आधुनिक शोधो में से जो प्रमाण उपलब्ध हुए हैं, उनके आधार पर दक्षिण में लौह उपकरणो के प्रयोग की प्राचीनता काफी पीछे तक जाती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि दक्षिण में लोहे का प्रयोग सहस्त्राब्दि ईसा पूर्व में प्रारम्भ हो गया था। हल्लूर उपकरणो की रेडियो कार्बन तिथि ईसा पूर्व 1000 के लगभग निर्धारित की गयी है।

भारत में लोहे की प्राचीनता के विषय में विवाद है। पहले ऐसा माना जाता था कि मध्य एशिया की हित्ती जाति (ई० पू० 1800-1200) का इस पर एकाधिकार था और सर्वप्रथम उसी ने इसका प्रयोग किया। किंतु अब इस सम्बंध में नवीन साक्ष्यों के मिल जाने के बाद यह मत मान्य नहीं है। नोह (राजस्थान) तथा इसके दोआब क्षेत्र से लोहा काले और लाल मृदभाण्डों के साथ मिलता है जिसकी सम्भावित तिथि ई० पू० 1500 है। कुछ स्थलों जैसे भगवानपुर माण्डा, दधेरी, आलमगीरपुर, रोपड़ आदि में चित्रित धूसर भाण्ड सैन्धव सभ्यता के पतन के साथ (लगभग ई० पू० 1700) मिलता है जिसका सम्बंध लोहे से माना गया। ऋग्वेद में कवच (वर्म) का उल्लेख है जो अवश्य ही लोहे के रहे होंगे। अधिकांश विद्वान यह मानने लगे हैं कि ऋग्वैदिक आर्यों को भी इसका ज्ञान था। हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त उत्तम कोटि के ताँबे और काँसे के उपकरण तथा गंगाघाटी से प्राप्त है

Scanned with CamScanner